

किसान छात्रावास बाड़मेर

1. नाम व पता — किसान छात्रावास बाड़मेर

रेल्वे स्टेशन के सामने, बाड़मेर

संचालक संस्था — किसान बोर्डिंग हाउस संस्थान, बाड़मेर

रजिस्ट्रेशन संख्या — 516/बाड़मेर/2010-2011

2. किसान छात्रावास का सफरनामा—

“20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में तथा इससे पहले मारवाड़ की धरती पर स्कूलों का जोधपुर शहर व अन्य बड़े कस्बों को छोड़कर अभाव था। जोधपुर में भी जोधपुर रियासत के सरकारी स्कूल नाम मात्र के ही थे। अधिकतर स्कूल सरकार की सहायता से जातीय आधार पर संचालित होते थे जिनमें आर्थिक तथा सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों के बच्चों के लिए प्रवेश असम्भव था। इसी बात को ध्यान में रख प्रबुद्ध जाट बन्धुओं ने सबसे पहले जोधपुर में जाट बोर्डिंग हाउस की स्थापना कर ग्रामीण सर्वजाति छात्रों के लिए निःशुल्क आवास व्यवस्था की, जिससे वे शहर में रह कर सरकारी स्कूल में अध्ययन कर सकें। जाट बोर्डिंग हाउस, जोधपुर की स्थापना में मारवाड़ रियासत के सभ्य जाटों का पूरा सहयोग रहा जिसमें चौधरी मूलचन्द, चौधरी भीयाराम, चौधरी रामदान, बलेदव राम मिर्धा, चौधरी गुल्लाराम, राधाकिशन मिर्धा अग्रिम पंक्ति में थे।

सन् 1922 में रामदान चौधरी का पदस्थापन जोधपुर रेलवे के मुख्यालय जोधपुर में पी.डब्ल्यू.आई. पद पर हुआ। इसी दौर में इन्होंने बलदेव राम मिर्धा व अन्य जाट बन्धुओं के सानिध्य में शिक्षा के महत्त्व को भली भाँति समझा और प्रारम्भ में अपने बड़े पुत्र लाल सिंह तथा अपने गाँव व बाड़मेर परगने के 16 जाट बच्चों को जाट बोर्डिंग हाउस, जोधपुर में भर्ती करवाया। चौधरी रामदान ने धीरे-धीरे अपने सभी रेलवे कर्मचारियों के पढ़ने योग्य बच्चों को भी जोधपुर बोर्डिंग में भर्ती कराया। जाट बोर्डिंग हाउस, जोधपुर के संचालन हेतु चौधरी रामदान आर्थिक सहयोग के लिए निरंतर चन्दा भी एकत्र करते थे। सन् 1930 में चौधरी रामदान ने निश्चित किया कि चूंकि बाड़मेर में अब एक मिडिल तथा प्राथमिक विद्यालय है अतः आठवीं तक मालानी के जाट बच्चों को बाड़मेर में ही रख कर पढ़ाया जावे जिससे छात्र अपने गाँव के नजदीक रहकर पढ़ सकते हैं। उस समय बाड़मेर कस्बे में जाट परिवार नहीं रहते थे और न ही बच्चों के रहने के लिए आवासीय व्यवस्था थी। इसलिए चौधरी रामदान ने अपना स्थानान्तरण बाड़मेर करवाया। छात्रावास स्थापना उस समय बहुत कठिन कार्य था। लेकिन लगन के पक्के रामदान चौधरी ने अपने पुत्र गंगाराम चौधरी के साथ छः अन्य पढ़ने योग्य ग्रामीण बच्चों को शामिल कर बाड़मेर रेलवे क्वार्टर्स में इनके आवास की व्यवस्था की तथा भोजन व्यवस्था अपने घर पर कर सरकारी स्कूल में भर्ती करवाया।

बाड़मेर में बोर्डिंग हाउस स्थापना का चौधरी रामदान का यह पहला कदम था। सन् 1933 में जोधपुर बोर्डिंग हाउस में अध्ययनरत लिखमाराम गोदारा व तोगाराम पाबड़ा को बाड़मेर ले आये और एक अन्य छात्र गुमनाराम को भी यहाँ पर रेलवे क्वार्टर्स में रख लिया। इस प्रकार अब कुल दस छात्र रेलवे क्वार्टर्स में एक ही छत के नीचे एक संग रहने एवं पढ़ने लगे। इस मुहिम में शिक्षा प्रेमी के रूप में एक अद्वितीय उदाहरण इस परिवार की महिलाओं ने प्रस्तुत किया। उन दिनों आटा पिसाई हेतु चक्की नहीं हुआ करती थी। ऐसी परिस्थिति में इनकी दूसरी धर्मपत्नी श्रीमती कस्तूरीदेवी एवं पुत्रवधू (ज्येष्ठ पुत्र श्री केसरीमल की पत्नी) श्रीमती सजनी देवी ही पूर्ण ममत्व के साथ घर में हाथ की चक्की (घट्टी) से आटा पीसकर अपने हाथ से रोटियाँ बनाकर इन शिक्षार्थियों को भोजन कराती थीं। उसी वर्ष छात्रावास में छात्रसंख्या 12 हो गई।

सन् 1933 में चौधरी रामदान व भीकमचंद चौधरी (पी.डब्ल्यू.आई.) के मकान जाटावास में बनकर तैयार हो गये। अब चौधरी साहब ने शिक्षार्थियों को रेलवे क्वार्टर्स से अपने मकान में स्थानान्तरित कर लिया। इन्होंने छात्रों के पढ़ने हेतु एक लम्बी टेबल व दो बेंच बनवा दी जिस पर छः सात लड़के एक साथ बैठकर पढ़ सकते थे। इन्होंने अपने एक मकान (पूर्वी मकान) में रेलवे के डाक्टर साहब को रख लिया। वे मकान किराये की एवज में शाम को सभी लड़कों को पढ़ाते थे। अध्यापक वेदपाल सिंह भी शाम को लड़कों को पढ़ाने आते थे।

सन् 1933 के अन्त में चौधरी साहब का स्थानान्तरण पिथोरा (सिंध) हो गया ऐसे में जाट बोर्डिंग हाउस में अध्ययनरत छात्रों की निगरानी एवं व्यवस्था की समस्या खड़ी हो गई। साथ ही बाड़मेर में विधिवत बोर्डिंग हाउस की स्थापना की योजना भी अधरझूल में पड़ती दिखी। ऐसी परिस्थिति में चौधरी साहब ने अपने ज्येष्ठ पुत्र श्री केसरीमल को (जो उस

समय रामसर में रेलवे की—मैन थे एवं आगामी पद जमादार पर पदोन्नति होने वाली थी) रेलवे नौकरी से त्याग पत्र दिलवाकर बाड़मेर बुलवा लिया ताकि खुद की अनुपस्थिति में इनके द्वारा प्रज्वलित शिक्षा की लौ मंद न पड़ जाये। केसरीमल चौधरी भी अपने पिताश्री की आज्ञा पालन करते हुए बिना किसी ना—नुकर के नौकरी से त्याग पत्र देकर बाड़मेर आ गये। केसरीमल चौधरी ने अपने घर में स्थापित बोर्डिंग हाउस की देखरेख के साथ—साथ जीवन यापन हेतु एक किराणा की दुकान भी प्रारंभ कर ली। अध्ययनरत छात्रों को खाली दुकानों में शिफ्ट कर स्वयं ने परिवार सहित मकान में निवास कर लिया। छात्रों के भोजन की व्यवस्था अब चौधरी सेठ केसरीमल की पत्नी श्रीमती सजनीदेवी अकेली ही पूर्व की भाँति हाथ की चक्की से आटा पीस कर करती रही। इतना ही नहीं श्रीमती सजनीदेवी ने अपने घर परिवारों से दूर अध्ययनरत इन बालकों को अनूठा वात्सल्य प्रदान किया।

सन् 1934 में गर्मियों की छुट्टियों के बाद बोर्डिंग हाउस की स्थापना में सहयोगार्थ नागौर से चौधरी मूलचंद सियाग को आमंत्रित किया गया और केसरीमल ने मूलचंद जी के साथ कई गाँवों की ऊँटों पर यात्रा की और लड़कों को बोर्डिंग में भर्ती होने के लिए तैयार किया। इस अभियान में गाँव—गाँव से अच्छा आर्थिक सहयोग भी मिला। इधर केसरीमल ने भी स्थानीय लोगों के सहयोग से काफी चंदा एकत्र कर लिया था। केसरीमल ने आर्थिक सहयोग प्राप्त होने पर भी कमचंद चौधरी का रिहायशी मकान किराये पर ले लिया। आखिरकार चौधरी रामदान की वर्षों की मेहनत एवं सपना 30 जून 1934 को साकार हो गया, जब चौधरी मूलचंद सियाग के कर—कमलों से शुभ पावन घड़ी में जाट बोर्डिंग हाउस, बाड़मेर का शुभारम्भ करवाया गया। इस समय छात्रावास का अलग से कोई विधान नहीं बनाया गया था। इसलिए पूर्व में रजिस्टर्ड 'जाट बोर्डिंग हाउस, जोधपुर' की शाखा मानकर इसी का विधान लागू कर दिया गया। इस तरह विधिवत छात्रावास स्थापना के साथ ही छात्रों की संख्या 19 हो गयी।

छात्रों की रसोई बनाने के लिए अब एक रसोइया रख लिया था जो भोजन बनाने के साथ अन्य कार्य करता था। छात्रों के खाने में बाजरे की रोटी एवं एक समय दाल व एक समय सब्जी बनती थी। छात्रावास संचालन में पीडब्ल्यूआई चौधरी छैलाराम तांडी (जोधपुर निवासी) का भरपूर सहयोग प्राप्त होता था। छात्रावास व्यवस्था तथा भोजन व्यवस्था खर्च का हिसाब केसरीमल स्वयं रखते थे। व्यवस्था कार्यों में छात्रों का सहयोग भी लिया जाता था। इस समय यहाँ कक्षा छः से ऊपरी कक्षा में कोई छात्र अध्ययनरत नहीं था। सन् 1934 तक मालानी में मात्र दो प्राइमरी स्कूल थे और एक मिडिल स्कूल बाड़मेर में था।

30 जून 1934 ई. को विधिवत जाट बोर्डिंग हाउस, बाड़मेर की कार्यकारणी का गठन किया गया जिसमें चौधरी रामदान (खड़ीन) अध्यक्ष, रामनारायण चौधरी, ठेकेदार हुकमसिंह कच्छवाहा तथा देवराज चौधरी (पीडब्ल्यूआई) उपाध्यक्ष तथा केसरीमल डऊकिया को महामंत्री बनाया गया। इसके साथ ही 17 कार्यकारिणी सदस्य लिये गये।

छात्रावास की विधिवत स्थापना के पश्चात् अध्यापक हरीसिंह चौहान (पीलवा) को निःशुल्क आवास प्रदान कर बोर्डिंग हाउस का सुपरिन्टेंडेंट नियुक्त किया गया। बाड़मेर शहर में गावों से आने वाले किसानों को भी बोर्डिंग में विश्राम सुविधा के साथ अपने ऊँट बाहर बांधने का स्थान भी मिल गया। किसानों के लिए अलग एक रसोई भोजन बनाने हेतु थी। साथ ही लकड़ी बोर्डिंग की ओर से मुफ्त में उपलब्ध करवा दी जाती थी। ये सुविधा कृषकों के लिए चौधरी रामदान की ओर से प्रदान की जाने वाली अनुपम सेवा थी।

केसरीमल के साथ—साथ भी कमचंद चौधरी, चौधरी छैलाराम पीडब्ल्यूआई, प्राइमरी स्कूल (द्वितीय) के हैडमास्टर फतेहसिंह अक्सर बोर्डिंग की सार—संभाल करते रहते थे। माह में कम से कम एक बार चौधरी रामदान पिथोरा से आकर अपने द्वारा रोपित इस पौधे (बोर्डिंग) की व्यवस्थाओं का जायजा अवश्य लेते थे। बोर्डिंग हाउस, जोधपुर से बोर्डिंग हाउस, बाड़मेर में अध्ययनरत

4—5 गरीब छात्रों को आर्थिक सहायता भी सुलभ करवाई जाती थी। सन् 1930 से ही बलदेव राम मिर्धा के प्रयासों से जोधपुर, नागौर, मेड़ता आदि छात्रावासों को जोधपुर स्टेट सरकार के कोष से कुछ आर्थिक सहायता छात्र संख्यानुसार मिलती थी। जाट बोर्डिंग हाउस, बाड़मेर को 30 रुपये की आर्थिक सहायता सन् 1937 से जोधपुर दरबार द्वारा स्वीकृत की गयी। कालान्तर में छात्र संख्यानुसार आगे इस राशि में वृद्धि होती रही।

बोर्डिंग हाउस, बाड़मेर के लिए स्वयं की जमीन एवं भवन निर्माण हेतु चंदा एकत्र करने का अभियान निरंतर जारी था। पीडब्ल्यूआई पद पर कार्यरत सभी जाट बन्धुओं को क्षेत्रवार रेलवे कर्मचारियों से चंदा एकत्र करवाने का जिम्मा दिया गया। साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों से चंदा उगाही का कार्य सेठ केसरीमल के साथ चौधरी आईदान भादू के जिम्मे था। सन् 1938 में चौधरी रामदान ने रेलवे पीडब्ल्यूआई क्वार्टर्स के पश्चिम में रेलवे बाउण्ड्री के पास बोर्डिंग भवन हेतु छः प्लॉट के बराबर जमीन खरीदकर चारों तरफ नींव भरवा दी। किन्तु दुर्भाग्यवश सन् 1939 (संवत् 1996) में भयंकर 'छिन्नवा अकाल' पड़ जाने के कारण बोर्डिंग के संचालन और खर्च में कठिनाइयाँ आने लगीं तब भवन निर्माण बंद करना पड़ा। इस कठिन दौर में छात्रावास संचालन के लिए आर्थिक तंगी भी आ गयी। जब विपदाएँ आती हैं तो चारों तरफ से आती

हैं। निरंतर बोर्डिंग हाउस की व्यवस्थाओं एवं छात्रों के खाना बनाने वाली वात्सल्य की मूर्ति केसरीमल की धर्मपत्नी श्रीमती सजनी देवी क्षय रोग से ग्रसित हो गई तथा उसी वर्ष सन् 1940 में उनका निधन हो गया। चौधरी केसरीमल व बोर्डिंग परिवार पर आपदाओं का पहाड़ टूट पड़ा।

‘छिन्नवा अकाल’ का प्रभाव पूरे मारवाड़ पर पड़ा, जिससे मारवाड़ के सभी परगनों में स्थापित जाट बोर्डिंग हाउस के आर्थिक हालात गड़बड़ा गये। जाट बोर्डिंग हाउस, जोधपुर की तरफ से इस कठिन काल में चौधरी मूलचंद व मास्टर रघुवीर सिंह कलकत्ता के मारवाड़ी सेठों के पास तथा चौधरी गुल्लाराम बम्बई मारवाड़ी सेठों व मारवाड़ रिलीफ सोसाइटी के पास आर्थिक सहयोग हेतु गये। वे कुछ सहायता राशि लेकर आये और इसमें से बाड़मेर बोर्डिंग हाउस को भी कुछ हिस्सा दिया गया। सन् 1940 में अकाल से उभरते ही चौधरी रामदान ने भवन निर्माण के लिए पुनः प्रयास प्रारंभ कर दिये। इन्हीं दिनों चौधरी रामनारायण आईएन सार्वजनिक निर्माण विभाग, जोधपुर से बाड़मेर आये। चौधरी रामदान ने इनसे बोर्डिंग भवन निर्माण के संबंध में परामर्श किया। रामनारायण चौधरी ने बोर्डिंग हाउस निर्माण हेतु पूर्व निर्धारित जगह छोटी होने के कारण अनुपयुक्त मानते हुए वर्तमान में जहां बोर्डिंग हाउस स्थित है, उस स्थान पर बड़ी जमीन लेकर बोर्डिंग हाउस बनाने का सुझाव दिया। उस समय यह भूमि खाली थी किन्तु इसके नजदीक श्मशान थे। फिर भी इस जगह को सभी ने उपयोगी समझा। अतः चौधरी साहब ने पहले वाली जमीन बेचकर इस जमीन के मालिक ठाकुर बुलीदानसिंह व सेठ सेवाराम से यह जमीन खरीद ली और तुरन्त ठेकेदार रामलाल व ठेकेदार हुकमसिंह कच्छावाह से आर्थिक सहयोग लेकर भवन निर्माण का कार्य प्रारंभ कर दिया। जाट बोर्डिंग हाउस, बाड़मेर भवन का निर्माण कार्य ठेकेदार हुकमसिंह कच्छावाह से करवाया गया।

सर्वप्रथम क्रय किये भूखण्ड के पूर्व की ओर चार कमरे और पश्चिम की ओर रसोईघर तथा सुपरिन्टेंडेंट के आवास का निर्माण करवाया गया। यह निर्माण कार्य जून 1941 में पूर्ण हो गया। इसलिए उसी वर्ष किराये के मकान को छोड़कर इस नवनिर्मित बोर्डिंग हाउस भवन में 22 अक्टूबर 1941 ई को छात्रावास प्रतिस्थापित कर लिया गया।

चौधरी साहब 10 वर्ष (सन् 1933 से 1943) पिथोरा, मोकलसर, बनाड़, पीपाड़ तथा लूनी जंक्शन आदि स्थानों पर सेवाएं देकर सन् 1943 में पुनः बाड़मेर पीडब्ल्यूआई पद पर पदस्थापित होकर आये। इनके बाड़मेर आगमन के साथ ही बोर्डिंग के शेष निर्माण कार्य को आगे बढ़ाने के प्रयास तेज हो गये। रेलवे कर्मचारियों तथा गाँवों से चंदा उगाही का काम तेज करने हेतु 9 जनवरी 1944 को बोर्डिंग हाउस प्रांगण में एक किसान सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें चौधरी बलदेव राम मिर्धा को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। सम्मेलन में समस्त गाँवों के मुखिया चौधरियों तथा रेलवे के अधिकारियों व कर्मचारियों को आमंत्रित किया गया।

इस सम्मेलन को बलदेव राम मिर्धा, गोरधनसिंह बेंदा (हाकम साहब), चौधरी मूलचंद सियाग, सूबेदार पन्नाराम ढिंगसरी एवं चौधरी रामदान ने संबोधित किया। चौधरी रामदान ने उपस्थित समस्त रेलवे स्टाफ को एक-एक माह का वेतन चंदे के रूप में देने हेतु आह्वान किया तो सभी रेलवे कर्मियों ने एक स्वर में अपनी सहमति जताई। सम्मेलन में वक्ताओं के प्रभावशाली उद्बोधनों से समाज बन्धुओं में समाज सेवा का भाव संचरित हुआ और हाथों-हाथ 1000 रुपये का चंदा सम्मेलन स्थल पर ही इकट्ठा हो गया तथा 6000 रु. का चंदा गाँव मुखियाओं/चौधरियों ने अलग-अलग गाँवों से भेजने का आश्वासन दिया। इस प्रकार चौधरी रामदान की मेहनत रंग लाई व जाट बोर्डिंग हाउस भवन निर्माण कार्य हेतु भरपूर आर्थिक सहयोग मिलने लगा एवं निर्माण कार्य पुनः प्रारंभ किया गया और सन् 1946 में भवन निर्माण का कार्य पूर्ण कर लिया गया। इस बोर्डिंग हाउस में जाटों के अतिरिक्त विश्‍नोई, सुनार, कलबी, माली, सिंधी मुसलमान, मिरासी, राजपूत, भील, कुम्हार, मेघवाल, नाई, दर्जी, ब्राह्मण आदि सभी जातियों के विद्यार्थी पढ़ते थे।

छात्रावास भवन निर्माण कार्य पूर्ण होते ही गाँव से आने वाले किसान भाइयों के विश्राम एवं ठहरने हेतु सुविधाजनक स्थान तैयार हो गया। साथ ही बाजार के काम से आने वाले, चिकित्सार्थ अस्पताल आने वाले, कोर्ट-कचहरी के काम से आने वाले सभी किसान भाइयों का यहाँ आश्रय था। इस तरह चौधरी रामदान की लगन, मेहनत और किसान प्रेम के कारण छात्रावास सुविधा के साथ किसानों के ठहरने, रोटि बनाने की एक समुचित व्यवस्था सुलभ हो गई। लोग कहने लगे कि बाड़मेर में जाटों को पगरखी (जूती) खोलने की जगह नहीं थी और चौधरी रामदान ने बनवा दी।

चौधरी रामदान, उनके ज्येष्ठ पुत्र सेठ केसरीमल तथा अन्य जाट बन्धुओं ने अपनी सच्ची लगन, एवं निष्ठा पूर्वक से जन-जन से आर्थिक सहयोग प्राप्त कर ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों के पढ़ने की राह बिना जातीय भेदभाव के तैयार की। सन् 1934 में किराये के मकान में 19 छात्रों से शुरू हुआ छात्रावास निरंतर प्रगति करता रहा तथा सन् 1951 तक छात्र संख्या 118 हो गयी। इस छात्रावास की पूर्व प्रतिभाओं में गंगाराम चौधरी (पूर्व राजस्व मंत्री), भगराज चौधरी (कलबी किसान, पूर्व वन मंत्री), प्रोफेसर राम लाल शर्मा (पूर्व प्रोफेसर, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय), इंजि. लच्छाराम चौधरी (पूर्व ओ.एन. जी.सी. भू-वैज्ञानिक) इंजि. धन्नाराम चौधरी (पूर्व ओ.एन.जी.सी. रसायन वैज्ञानिक), मुराद अली अबड़ा (सेवानिवृत्त राज. पुलिस महानिरीक्षक) आदि महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं, जिन्होंने 1934 से 1960 के मध्य इस छात्रावास में रहकर प्रारम्भिक शिक्षा

प्राप्त की और मालानी क्षेत्र (बाड़मेर) का नाम रोशन किया। इस छात्रावास के माध्यम से आर्थिक रूप से कमजोर पिछड़े किसान वर्ग की कई पीढ़ियों का भविष्य संवारा गया। वर्तमान में भी यहाँ से शिक्षा प्राप्त करने वाले कई युवक भारतीय प्रशासनिक सेवा, राजस्थान प्रशासनिक सेवा, भारतीय रेल सेवा, चिकित्सा सेवा में डॉक्टर, विभिन्न इंजिनियरिंग सेवा तथा अन्य सेवाओं में कार्यरत हैं। शिक्षा के साथ पूर्व छात्रों ने राजनीतिक क्षेत्र में भी नये आयाम स्थापित किए हैं।

आजादी पश्चात् मारवाड़ रियासत में स्थापित समस्त जाट बोर्डिंग हाउस का सन् 1949 में नाम परिवर्तित कर 'किसान बोर्डिंग हाउस' किया गया तथा जाट बोर्डिंग हाउस, बाड़मेर का भी नाम किसान बोर्डिंग हाउस किया गया। तत्कालीन समय में समस्त छात्रावासों का संचालन बोर्डिंग हाउस, जोधपुर के विधान के अनुसार होता था तथा आवश्यकतानुसार आर्थिक सहयोग भी मिलता था। सन् 1956 में राजस्थान सरकार की नई व्यवस्थानुसार आर्थिक अनुदान हेतु किसान बोर्डिंग हाउस, जोधपुर का पंजीयन करवाया गया जिसमें 16 उप शाखाओं में से एक किसान बोर्डिंग हाउस, बाड़मेर भी था। तत्पश्चात् शिक्षा निदेशक, शिक्षा विभाग, बीकानेर ने इन छात्रावासों को शैक्षणिक संस्थानों के रूप में मान्यता (पत्र क्रमांक 95/56-57/15 दिनांक 22 अक्टूबर 1956) प्रदान की जिसमें बाड़मेर का नाम ग्यारहवें स्थान पर अंकित है। फिर प्रत्येक जिला शिक्षा अधिकारी ने क्रमशः जोधपुर, नागौर, बाड़मेर तथा जालोर में स्थित छात्रावासों के संचालन, प्रवेश तथा आय-व्यय के निर्धारण हेतु दिशा निर्देश जारी किये। उपरोक्त मान्यता पश्चात् लम्बे समय तक जोधपुर किसान बोर्डिंग हाउस विधानानुसार आर्थिक अनुदान मिलता रहा।

किसान बोर्डिंग हाउस, बाड़मेर का लम्बा सफर संस्थापक चौधरी रामदान के त्याग और तपस्या का फल है जिसमें इनके ज्येष्ठ पुत्र सेठ केसरीमल चौधरी, इनके परिवार की महिलाओं कस्तूरी देवी व सजनी देवी तथा उनके मंझले पुत्र गंगाराम चौधरी का अनुकरणीय योगदान रहा है। जाट समाज व किसान वर्ग हमेशा चौधरी साहब व इनके परिवार का ऋणी रहेगा। सेठ केसरी मल का त्याग तो अतुल्य है जिन्होंने अपनी नौकरी छोड़ कर जाट समाज व किसानों के हजारों बच्चों को शिक्षित करने के यज्ञ में पितातुल्य त्याग किया जो शायद हर पिता भी नहीं कर सकता।

छात्रावास के इस पौधे को नींव से सिंचित कर वट वृक्ष बनाने वाले जो महानुभाव समय-समय पर छात्रावास प्रबन्ध कार्यकारणी के अध्यक्ष रहे उनके नाम ये हैं — चौधरी रामदान, रूपचंद तरड़, भारतमल सोलंकी, खेमाराम बांगड़वा, मानाराम बेनीवाल तथा वर्तमान में एडवोकेट बलवंत सिंह चौधरी एवं समय-समय पर सचिव रहे केसरीमल डउकिया, गंगाराम चौधरी, जोधाराम गोदारा, मूलसिंह जाखड़, श्रीराम चौधरी तथा वर्तमान सचिव डालूराम चौधरी आदि का भी महत्वपूर्ण योगदान है। चौधरी केसरीमल के स्वर्गवास के पश्चात् गंगाराम चौधरी ने छात्रावास संरक्षक के रूप में आधुनिक सोच के साथ किसान बोर्डिंग हाउस की प्रगति को निरंतर गतिमान बनाये रखा।

'स्कूल तथा शैक्षणिक छात्रावास की सुव्यवस्था एक अध्यापक से अच्छी और कोई नहीं चला सकता।' इसी मूलमंत्र को ध्यान में रखते हुए चौधरी रामदान ने जाट बोर्डिंग हाउस से किसान बोर्डिंग हाउस के सफर में छात्रावास सुपरिटेण्डेंट (व्यवस्थापक) के पद पर हमेशा शिक्षकों को ही रखा। सन् 1934 से 1938 तक तो चौधरी भीकमचन्द सुपरिटेण्डेंट रहे। सन् 1938 से 1942 तक उस समय बाड़मेर की प्राइमरी स्कूल के प्रधानाध्यापक गणेशीराम माली को व्यवस्थापक रखा जो आगे चलकर राजस्थान प्रदेश स्काउट कमिश्नर रहे। इस छात्रावास के पूर्व छात्र तथा अध्यापक खेमाराम बांगड़वा लम्बे समय सन् 1942 से 1957 तक सुपरिटेण्डेंट रहे। वे पुनः सन् 1967 से 1969 तक व्यवस्थापक रहे। इनसे पहले थोड़े-थोड़े समय के लिए प्रफुलचन्द सैन (जालोर), अमरसिंह माली, जाहनसिंह (आडेल) तथा भैरुदत्त व्यास (जोधपुर) छात्रावास सुपरिटेण्डेंट रहे जो सभी अध्यापक थे। सन् 1983 से 1997 तक 15 साल निरंतर हेमाराम पूनिया इस छात्रावास के अधीक्षक रहे।

किसान बोर्डिंग हाउस, बाड़मेर में लम्बे समय से निरंतर निर्माण कार्य होने से छात्रावास में आवासीय सुविधाओं का विस्तार होता रहा साथ ही छात्रावास को आर्थिक सम्बलता हेतु मुख्य सड़क की तरफ दुकानों का निर्माण करवाया गया। वर्तमान में छात्रों के लिए 37 कमरे, 3 हाल, 2 कार्यालय कक्ष, कम्प्यूटर कक्ष तथा 51 दुकानों का निर्माण तीन चरणों में (1980-85, 1995-96 तथा 2001-2002) पूरा हुआ। छात्रावास में स्व. सेठ केसरीमल की यादगार में इनके पुत्रों द्वारा निर्मित प्याऊ भी है। किसान बोर्डिंग हाउस प्रांगण में प्रति वर्ष 15 मार्च को चौधरी रामदान जयंती समारोह पूर्वक मनाई जाती है जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में समाज सेवी, शिक्षाविद्, जनप्रतिनिधि अथवा प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों को बुलाया जाता है। वैसे तो मालानी के महामना चौधरी रामदान मालानी के जाटों तथा अन्य पिछड़ों के हृदय में बसे हैं, फिर भी इनकी पावन स्मृति में सन् 1986 में इस महामना की मूर्ति छात्रावास प्रांगण के मध्य इनके पौत्र डा. गणपत स्वरूप द्वारा स्थापित करवाई गयी। 15 मार्च 1986 को किसान मसीहा नाथूराम मिर्धा के कर कमलों से मूर्ति का अनावरण हुआ तथा इस अवसर पर पूनमचन्द विश्‍नोई, पूर्व मंत्री एवं विधानसभा अध्यक्ष की गरिमामय उपस्थिति रही।

डॉ. गंगाराम जाखड़, एच.आर इसराण जोगाराम सारण की पुस्तक "मारवाड़ जाट समाजिक एवं शैक्षिक जागृति" से साभार

3. कार्यकारिणी— इस छात्रावास की दीर्घकालीन इतिहास में महत्पूर्ण व्यक्तियों ने कार्यकारिणी में रहकर छात्रावास के विकास में अमूल्य योगदान दिया है, जिनका विवरण इस प्रकार है—

प्रथम कार्यकारिणी —जाट बोर्डिंग हाऊस , बाड़मेर की प्रथम प्रबन्ध कार्यकारिणी का इस छात्रावास की संस्थापक श्री रामदान डऊकिया द्वारा 30 जून 1934 को किया गया जो इस प्रकार है—

क्र.सं.	नाम अध्यक्ष	क्र.सं.	साधारण सभाषद
1	अध्यक्ष — चौधरी श्री रामदान डऊकिया खड़ीन	7	श्री चौधरी हरचंद जी मूढ
2	उपाध्यक्ष — 1. श्री रामनारायण जी , एईएन, पीडब्ल्यू 2. श्री हुकम सिंह ठेकेदार 3. श्री देवराज चौधरी पीडब्ल्यू	8	श्री चौधरी नंदराम जी बेनीवाल
3	सेक्रेटरी — श्री केसरीमल जी डऊकिया, खड़ीन	9	श्री चौधरी ताजाराम जी आडेल
4	जोइंट सेक्रेटरी — श्री बाबू रघूनाथ सिंह गार्ड	10	श्री चौधरी अचलाराम जी डूडी
1.	साधारण सभाषद श्री बाबू गणेशीराम हैडमास्टर	11	श्री चौधरी जेठाराम जी बेनीवाल
2	श्री नन्दराम जी चौधरी, बायतु	12	श्री चौधरी कलाराम जी सारण
3	श्री हरगोविन्द जी हैडमास्टर	13	श्री चौधरी आईदान जी भादू
4	श्री फतेहसिंह जी हैडमास्टर	14	श्री चौधरी जोधा राम जी सारण
5	श्री फुसाराम जी हैडमास्टर	15	श्री चौधरी हरजीराम जी जाखड़
6	श्री चौधरी जुगताराम जी पीडब्ल्यूआई	16	श्री ठाकर हुकमसिंह जी सब इंस्पेक्टर
		17	श्री चौधरी ताजाराम जी आडेल

अध्यक्ष एवं सचिव की सूची—

क्र.सं.	नाम अध्यक्ष	क्र.सं.	नाम सचिव
1	श्री रामदान डऊकिया	1	श्री केसरीमल डऊकिया
2	श्री रुपचंद जी तरड़	2	श्री गंगाराम डऊकिया
3	श्री भारतमल सोलकी	3	श्री जोधाराम गोदारा
4	श्री खेमाराम बांगड़वा	4	श्री भारतमल सोलकी
5	श्री मानाराम बेनीवाल	5	श्री मूलसिंह जाखड़
6	श्री भारतमल सोलकी	6	श्री बलवंतसिंह चौधरी
7	श्री बलवंतसिंह चौधरी	7	श्री श्रीराम चौधरी
		8	श्री डालूराम चौधरी

वर्तमान कार्यकारिणी सदस्यों की सूची (2023)

क्र.सं.	नाम	पिता का नाम	पद	पूर्ण पता	मो.न.
1.	श्री गणपत स्वरूप	श्री गंगाराम चौधरी	संरक्षक	पुराना जाटावास, बाड़मेर	9414042969
2.	श्री बलवन्त सिंह चौधरी	श्री ऊदाराम चौधरी	अध्यक्ष	नेहरु नगर बाड़मेर	9413005838
3.	श्री हेमाराम चौधरी	श्री मूला राम चौधरी	उपाध्यक्ष	नेहरु नगर बाड़मेर	9414107440
4.	श्री डालुराम चौधरी	श्री कुम्भा राम चौधरी	सचिव	महावीर नगर, बाड़मेर	9414107375
5.	श्री तोगाराम चौधरी	श्री नरसिंह राम चौधरी	कोषाध्यक्ष	बलदेव नगर, बाड़मेर	9414531400
6.	श्रीमती मदन कौर	श्री मोहन राम जी	सदस्य	वीर तेजाजी शि.स.बालोतरा	9414203165
7.	श्री हरीश चौधरी	श्री मूल सिंह चौधरी	सदस्य	आंचल सिनेमा, बाड़मेर	9414106999
8.	श्री रणछोड़ दास	श्री बस्तीराम	सदस्य	माधासर बायतु, बाड़मेर	9413307805
9.	श्री पुनम सिंह गोदारा	श्री तेजा राम चौधरी	सदस्य	पुराना जाटावास बाड़मेर	9413183232
10.	श्री जवाहर लाल महेश्वरी	श्री बालकिशन	सदस्य	गौशाला के पास, बाड़मेर	9414384049
11.	श्री पांचाराम	श्री गंगाराम चौधरी	सदस्य	लक्ष्मी नगर, बाड़मेर	9414529313
12.	श्री चेनाराम चौधरी	श्री ऊदाराम चौधरी	सदस्य	महावीर नगर, बाड़मेर	9414410320
13.	डॉ. प्रियका चौधरी	श्री गणपत स्वरूप	सदस्य	पुराना जाटावास बाड़मेर	9929108200
14.	श्री अमरा राम चौधरी	श्री नानगाराम चौधरी	सदस्य	महावीर नगर, बाड़मेर	9414410320
15.	श्री गफूर अहमद	श्री अब्दूल हादी	सदस्य	बुरहान का तला, बाड़मेर	9828102887
16.	श्री नरसिंह सोलकी	श्री भारतमल सौलकी	सदस्य	हमीरपुरा, बाड़मेर	9571161695
17.	श्री तेज सिंह	श्री जीवणा राम चौधरी	सदस्य	माडपुरा बरवाला, बाड़मेर	9879507273
18.	श्री हेमाराम चौधरी	श्री जोधाराम	सदस्य	गांधी नगर बाड़मेर	9414754066
19.	श्री महेन्द्र चौधरी	श्री राम चौधरी	सदस्य	नेहरु नगर, बाड़मेर	9461006191
20.	श्री दिलीप कुमार थोरी	श्री जोधाराम चौधरी	सदस्य	बलदेव नगर, बाड़मेर	9414104004
21.	श्री राजेश बेनिवाल	श्री जगदीश प्रसाद	सदस्य	बलदेव नगर, बाड़मेर	9414105862
22.	श्री नुकलाराम	श्री पेमाराम	व्यवथापक	किसान छात्रावास, बाड़मेर	8209489288
23.	श्रीमती कमृत कौर	श्री फतेह सिंह	व्यवस्थापिका	किसान कन्या छात्रावास, बाड़मेर	9462226494
24.	श्री सोनाराम जाट	श्री किशनाराम थोरी	सह व्यवस्थापक	किसान कन्या छात्रावास, बाड़मेर	9414493892

4. भौतिक संसाधन – सर्वप्रथम क्रय किये भूखण्ड के पूर्व की ओर चार कमरे और पश्चिम की ओर रसोईघर तथा सुपरिन्टेंडेंट के आवास का निर्माण करवाया गया। यह निर्माण कार्य जून 1941 में पूर्ण हो गया। इसलिए उसी वर्ष किराये के मकान को छोड़कर इस नवनिर्मित बोर्डिंग हाउस भवन में 22 अक्टूबर 1941 ई को छात्रावास प्रतिस्थापित कर लिया गया। इसके बाद किसान बोर्डिंग हाउस, बाड़मेर में लम्बे समय से निरंतर निर्माण कार्य होने से छात्रावास में आवासीय सुविधाओं का विस्तार होता रहा साथ ही छात्रावास को आर्थिक सम्बलता हेतु मुख्य सड़क की तरफ दुकानों का निर्माण करवाया गया। वर्तमान में छात्रों के लिए 37 कमरें, 3 हाल, 2 कार्यालय कक्ष, कम्प्यूटर कक्ष तथा 51 दुकानों का निर्माण तीन चरणों में (1980–85, 1995–96 तथा 2001–2002) पूरा हुआ। वर्तमान में दक्षिण दिशा में आद्युनिय सुविधाओं से युक्त दो मंजिला भवन निर्माणाधीन है, जो बनने पर बोर्डिंग की आवासिय क्षमता में वृद्धि होगी।

छात्रावास के दानदातागण

(1934 से 1944 तक)

1. ठेकेदार श्री विरधाराम उम्मेदाराम जी खोजा गांव रतकूड़िया जिला जोधपुर द्वारा विश्र का निर्माण
2. ठेकेदार रामलाल हुक्मसिंह कच्छवाह जोधपुर रु. 1000 /—
3. चौ. रामदान जी डउकिया खड़ीन की तरफ से सप्रेमभेंट रु 301 /—
4. चौ. सुरताराम बागाराम धतरवाल बायतु रु 451 /—
5. श्री विरधाराम जी डउकिया खड़ीन की तरफ से सप्रेम भेंट रु 1100 /—
6. श्री आईदानराम जी भादू शिवकर रु 400 /—
7. श्री फूसाराम मोटाराम जी गोलिया गांव कवास रु 301 /—
8. चौधरी धन्नाराम जी रायसिंह जी वांभू डेगाना मारवाड़ रु 251 /—
9. चौधरी खेताराम धन्नाराम सियोल गांव झोल—सिंध। रु 301 /—
10. समस्त चौधरीयान गांव नेतराड़ परगना मालानी कमरा निमार्ण रु 451 /—
11. समस्त चौधरीयान गांव धारासर, रतासर, बीजराड़, जेसार,शोभाला रु 451 /—
12. समस्त चौधरीयान गांव खड़ीन रु 451 /—
13. समस्त चौधरीयान गांव कुड़ला रु 451 /—
14. समस्त चौधरीयान गांव बाटाडू रु 451 /—
15. समस्त चौधरीयान गांव बायतु रु 451 /—
16. समस्त चौधरीयान गांव चवा रु 301 /—
17. समस्त चौधरीयान गांव रावतसर रु 301 /—
18. समस्त चौधरीयान गांव सरली रु 301 /—
19. उस समय रेल्वे के कार्यरत सभी कर्मचारी एवं गेंगमैनों ने एक माह का वेतन दिया।

**नवीन भवन निर्माण में सर्वाधिक आर्थिक सहयोग
करने वाले दानदाता (1973)**

- | | |
|---|-----------|
| 1. श्री जेहाराम, तगाराम, मोटाराम, जीवणाराम पुत्र श्री नंदराम कड़वासरा माडपुरा बरवाला द्वारा | रु 5100/- |
| 2. चौधरी धर्मपाल सिंह ठेकेदार गंगानगर | रु 5000/- |
| 3. स्व. पूराराम जी डूडी माडपुरा बरवाला की यादगार में उनके परिवार द्वारा | रु 4501/- |

कमरों एवं दुकानों के दानदाता - पीडीएफ

**दुकान निर्माण में आर्थिक सहयोग देने वाले दानदाता
(1980-85)**

- | | |
|--|---------|
| 1. श्री नन्दराम जी निम्बाणी कड़वासरा परिवार माडपुरा बरवाला द्वारा | 25101/- |
| 2. श्री तेजाणी डऊकिया परिवार खड़ीन द्वारा | 25001/- |
| 3. स्व. केसरीमल पुत्र श्री रामदान डऊकिया खड़ीन की स्मृति में उनके पुत्रों द्वारा प्याऊ निर्माण हेतु | 20001/- |
| 4. स्व. बनूदेवी सुपुत्री श्री विशनाराम सारण नौद की स्मृति में | 12000/- |
| 5. वीरादेवी पत्नी श्री हेमाराम मूढ बांदरा की स्मृति में | 11000/- |
| 6. श्री उगराराम, मुल्तानाराम डऊकिया खड़ीन द्वारा | 8001/- |
| 7. स्व. श्री मूलाराम, लालाराम पिता श्री नगाराम धतरवाल बायतु भीमजी की स्मृति में इनके पुत्र श्री हेमाराम चौधरी द्वारा | 6001/- |
| 8. श्री नानगाराम पिता श्री लिछमणाराम जाणी बायतु भीमजी द्वारा | 6001/- |
| 9. श्री जुगताराम पिता श्री आदाराम गोदारा बायतु पनजी | 6001/- |
| 10. श्रीमति सोनीदेवी पत्नी श्री जुगताराम गोदारा बायतु पनजी | 6001/- |
| 11. श्री भैराराम पुत्र श्री आदाराम बांगड़वा बायतु भीमजी | 6001/- |
| 12. श्री नरसिंगाराम पुत्र श्री हैराजराम माचरा बायतु भीमजी | 6001/- |
| 13. श्री मानाराम, लाधुराम सऊ कवास द्वारा | 6001/- |
| 14. श्री भैराराम पुत्र श्री पूर्णाराम लोल, झाख स्वामीजी | 6001/- |
| 15. स्व. चैनाराम पुत्र श्री मानाराम सारण सवाऊ पदमसिंह | 6001/- |
| 16. स्व. भीयाराम पुत्र श्री मानाराम सारण सवाऊ पदमसिंह | 6001/- |
| 17. श्री नन्दराम पुत्र श्री तेजाराम बैनीवाल खड़ीन | 6001/- |
| 18. श्री गोरधनसिंह पुत्र श्री सालूराम जी डऊकिया खड़ीन | 6001/- |
| 19. श्री चुतराराम पुत्र श्री कुम्भाराम जी कड़वासरा माडपुरा बरवाला | 6001/- |
| 20. श्री टीकमाराम, लुम्भाराम पुत्र श्री अभाराम गोदारा, माडपुरा बरवाला | 6001/- |
| 21. श्री देवाराम जी मानाणी कड़वासरा परिवार, माडपुरा बरवाला | 6001/- |
| 22. श्री जेठाराम पुत्र श्री चौखाराम भाम्भु माडपुरा बरवाला | 6001/- |
| 23. श्री फूसारास, लाधुराम किशनोणी डूडी माडपुरा बरवाला | 6001/- |
| 24. श्रीमति खेमीदेवी पत्नी श्री अखाराम सियाग, माडपुरा बरवाला | 6001/- |
| 25. ग्राम माडपुरा बरवाला के किसानों द्वारा | 6001/- |
| 26. श्री शेराराम पुत्र श्री मेघाराम भाम्भु माडपुरा बरवाला | 6001/- |
| 27. श्री मेहाराम पुत्र श्री चैनाराम सियोल, शिवकर | 6001/- |
| 28. श्री भीखाराम पुत्र श्री देदाराम, मोटाराम पुत्र श्री बालाराम गोदारा खुडाला | 6001/- |
| 29. श्रीमति एवं श्री केसरीमल पुत्र श्री रामदान डऊकिया, बाड़मेर | 6001/- |
| 30. स्व. श्री रामदान की स्मृति में उनके पौत्र डॉ. अर्जुन सिंह चौधरी द्वारा | 6001/- |

**बाड़मेर जिले के बाहर के सेवाव्रतधारी महापुरुष जिन्होंने संस्था
के लिए आर्थिक सहयोग करवाया –**

1. चौ. बलदेवराम जी मिर्धा
2. चौ. गुल्लाराम जी रतकुड़िया
3. चौ. भीयाराम जी सियाग परबतसर
4. चौ. बाबू गोकुलदास जी
5. चौ. नाथूराम जी मिर्धा
6. चौ. परसराम जी मदेरणा

5. विद्यार्थी विवरण – इस छात्रावास मे प्रारम्भ से स्कूल शिक्षार्जन करने वाले विद्यार्थीयों को प्रवेश दिया जाता रहा है। इस छात्रावास में सन् 1934 से लेकर आज तक वर्ष वार निम्नानुसार छात्र अध्यनरत रहे है—

क्र.सं.	वर्ष	छात्र संख्या	क्र.सं.	वर्ष	छात्र संख्या
1.	1934	19	45	1979	84
2.	1935	35	46	1980	87
3.	1936	37	47	1981	125
4.	1937	40	48	1982	49
5.	1938	39	49	1983	59
6.	1939	39	50	1984	67
7.	1940	48	51	1985	56
8.	1941	48	52	1986	77
9.	1942	52	53	1987	106
10	1943	56	54	1988	100
11	1944	78	55	1989	140
12	1945	74	56	1990	122
13	1946	89	57	1991	140
14	1947	97	58	1992	135

15	1948	88	59	1993	141
16	1949	100	60	1994	100
17	1950	112	61	1995	92
18	1951	118	62	1996	70
19	1952	108	63	1997	72
20	1953	96	64	1998	59
21	1954	83	65	1999	62
22	1955	72	66	2000	61
23	1957	71	67	2001	56
24	1958	81	68	2002	92
25	1959	99	69	2003	112
26	1960	80	70	2004	112
27	1961	75	71	2005	121
28	1962	78	72	2006	121
29	1963	77	73	2007	131
30	1964	75	74	2008	131
31	1965	70	75	2009	115
32	1966	76	76	2010	130
33	1967	39	77	2011	130
34	1968	65	78	2012	125
35	1969	63	79	2013	135
36	1970	70	80	2014	155
37	1971	65	81	2015	159
38	1972	73	82	2016	160
39	1973	64	83	2017	180
40	1974	57	84	2018	185
41	1975	63	85	2019	160
42	1976	86	86	2020	100
43	1977	61	87	2021	170
44	1978	86	88	2022	180
			89	2023	185

छात्रावास के विद्यार्थी जो उच्च पदों पर पहुँचे- पीडीएफ

6. छात्रावास के व्यवस्थापकों की सूची –

क्र.सं.	नाम व्यवस्थापक	क्र.सं.	नाम व्यवस्थापक
1	श्री भीकमचन्द चौधरी, बाड़मेर	14	श्री आसू सिंह लेगा, बांदरा
2	श्री हरि सिंह चौहान, पीलवा	15	श्री कानाराम चौधरी, छोटू
3	श्री धूमसिंह चौधरी, हिसार	16	श्री मोटा राम बागड़वा, बायतू
4	श्री गणेशीराम माली, समदड़ी	17	श्री राजु सिंह कड़वासरा, कवास
5	श्री प्रफुलचन्द सैन साहब, जालौर	18	श्री शेर सिंह जाखड़, कवास
6	श्री अमर सिंह माली,	19	श्री रघुवीर सिंह कड़वासरा, कुड़ला
7	श्री जाहन सिंह चौधरी, आडेल	20	श्री हेमा राम पूनिया, जालिपा
8	श्री भैरुदत्त व्यास, जोधपुर	21	श्री जूगता राम कड़वासरा, खड़ीन
9	श्री खेमाराम बागड़वा, बायतू	22	श्री चन्द्र प्रकाश डडकिया, सरली
10	श्री श्रीराम चौधरी, जायल	23	श्री रणवीर सिंह भादूं, नेतराड़
11	श्री गुमना राम भादूं, शिवकर	24	श्री धर्मराम चौधरी, कवास
12	श्री फतेह सिंह चौधरी, खड़ीन	25	श्री मेघाराम जी सिणधरी
13	श्री लाल चन्द चौधरी, बाड़मेर	26	श्री धर्मराम जी,
		27	श्री नुकला राम डूडी

7. भोजन एवं आवास व्यवस्था – इस छात्रावास में प्रारम्भ से ही सामूहिक मँस की व्यवस्था है, ताकि विद्यार्थियों के अध्ययन में व्यवधान नहीं हो। विद्यार्थियों को वास्तविक खर्च पर शुद्ध सात्विक पौष्टिक भोजन उपलब्ध करवाया जाता है। बिजली-पानी के वास्तविक व्यय के अलावा विद्यार्थियों से कोई शुल्क नहीं लिया जाता है ताकि ग्रामीण क्षेत्र के साधारण किसान परिवारों की बालक यहाँ रहकर शिक्षा प्राप्त कर सकें।

8. प्रवेश प्रक्रिया एवं नियमावली – इस छात्रावास में सभी वर्गों के कक्षा 10वीं, 11वीं, 12वीं के विद्यार्थियों को संस्थान की निर्धारित प्रवेश प्रक्रिया के आधार पर प्रवेश दिया जाता है। प्रतिवर्ष जून-जुलाई माह में आवेदन पत्र लिए जाकर मेरिट के आधार पर प्रवेश दिया जाता है। बालकों के लिए छात्रावास की विशेष युनिफॉर्म निर्धारित है।

9. शैक्षिक एवं सहशैक्षिक गतिविधियाँ – छात्रावास में विद्यार्थियों के लिए निरंतर शैक्षिक एवं सहशैक्षिक गतिविधियाँ संचालित होती रहती हैं। पुस्तकालय में प्रतियोगी परीक्षाओं की अनेक उपयोगी पुस्तकें हैं, जिनका लाभ विद्यार्थी ले रही हैं। छात्रावास में प्रति वर्ष अग्रेजी की विशेष कक्षाएं आयोजित होती हैं। आउटडोर खेल बॉलीबॉल, कबड्डी, खो-खो, आदि के खेल मैदान हैं, जहाँ पर सांयकाल में नियमित रूप से बालक खेलती हैं। संस्थान में प्रतिदिन सांयकाल में प्रार्थना का आयोजन होता है।

छात्रावास में किसान मसीहा रामदान चौधरी, बलदेवराम मिर्धा, चौधरी चरण सिंह, महाराजा सूरजमल, गंगाराम चौधरी, चौ. देवीलाल आदि महापुरुषों की जयन्तियाँ एवं विशिष्ट अवसरों को समारोह पूर्वक मनाया जाता है। इन अवसरों पर विशिष्ट व्यक्तियों के प्रेरक व्याख्यान आयोजित होते हैं, जिनसे विद्यार्थियों को कैरियर निर्माण हेतु मार्गदर्शन मिलता है। प्रति वर्ष 15 मार्च को छात्रावास के संस्थापन चौधरी रामदान की जयन्ती पर वार्षिकोत्सव के साथ बोर्ड परीक्षाओं, खेल, सरकारी सेवा या अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में उच्च पद पर चयनित समाज की प्रतिभाओं को पुरस्कार देकर सम्मान किया जाता है।

छात्रावास के विभिन्न कार्यक्रमों में शिरकत करने वाली शख्सियतें—

1. चौ. मूलचन्द जी सियाग नागौर
2. चौ. बलदेवराम जी मिर्धा
3. चौ. गुल्लाराम जी रतकुड़िया
4. चौ. भीयाराम जी सियाग परबतसर
5. चौ. नाथूराम जी मिर्धा

6. चौ. देवीलाल जी, उप प्रधानमंत्री, भारत सरकार
7. चौ. परसराम जी मदरेणा, विधानसभा अध्यक्ष, राजस्थान
8. श्री मोहनलाल सुखाड़िया, मुख्यमंत्री राजस्थान
9. श्री बरकतुल्लाह खान, मुख्यमंत्री, राजस्थान
10. श्री हरिदेव जोशी, मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार
11. श्री दौलतराम सारण केन्द्रिय मंत्री भारत सरकार
12. श्रीमती कमला बेनिवाल, राज्यपाल राजस्थान
13. चौ. रानिवास जी मिर्धा केन्द्रिय मंत्री भारत सरकार
14. श्री पूनमचंद विश्नोई, विधानसभा अध्यक्ष
15. डॉ. ज्ञानप्रकाश पिलानिया, पुलिस महानिदेशक, राजस्थान
16. श्रीमती सुमित्रा सिंह, विधानसभा अध्यक्ष राजस्थान
17. श्री अमर सिंह परौदा, कुलपति
18. श्री अमर सिंह गोदारा, न्यायाधीश
19. श्री हरसुखराम पूनिया, न्यायाधीश
20. श्री बी. एल. चौधरी, कुलपति
21. श्री बी आर ग्वाला, पुलिस महानिदेशक राजस्थान
22. श्री राजेन्द्र चौधरी, राजस्थान सरकार
23. डॉ. चन्द्रभान, मंत्री राजस्थान सरकार
24. डॉ. रामप्रताप मंत्री राजस्थान सरकार
25. श्री दुश्यन्त सिंह, सांसद, झालावाड़
26. श्री दिगम्बर सिंह, मंत्री, राजस्थान सरकार
27. श्री ले.ज. प्रकाश एस. चौधरी
28. डॉ. गंगाराम जाखड़, कुलपति